

साहित्य में प्रेम और सदभावना के प्रसंग: आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की हिन्दी की यात्रा

प्रो. छत्रसाल सिंह

आचार्य (शिक्षाशास्त्र), शिक्षा विद्या शाखा, उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

भूमिका

भारतीयों की पहचान किसी एक तत्व तक सीमित नहीं है; यह अनेक सांस्कृतिक, सामाजिक और नैतिक मूल्यों का संगम है, जो पूरे देश को एक सूत्र में बांधता है। सबसे प्रमुख तत्व है “विविधता में एकता”। भारत में भाषाएँ, धर्म, वेशभूषा, खान-पान और परंपराएँ भिन्न हैं, फिर भी एक साझा सांस्कृतिक चेतना सबको जोड़ती है। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक भिन्नताओं के बावजूद भारतीय होने का भाव सभी में समान रूप से विद्यमान रहता है। दूसरा महत्वपूर्ण आधार है सांस्कृतिक विरासत—जैसे त्योहार, लोकपरंपराएँ, साहित्य, संगीत और कला। दीवाली, ईद, क्रिसमस जैसे पर्व मिल-जुलकर मनाना भारतीय समाज की समरसता को दर्शाता है। तीसरा तत्व है संवैधानिक मूल्य। भारतीय संविधान सभी नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षता और बंधुत्व का अधिकार देता है।

यही मूल्य भारतीयों को एक राष्ट्रीय पहचान प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त राष्ट्रप्रेम, सहिष्णुता, और “वसुधैव कुटुम्बकम्” जैसी भावनाएँ भी भारतीयता की पहचान हैं, जो न केवल देश के भीतर बल्कि विश्व स्तर पर भी मानवता का संदेश देती हैं। इस प्रकार, भारतीयों की पहचान उन साझा मूल्यों और परंपराओं में निहित है जो भिन्नताओं के बावजूद सभी को एक मजबूत सूत्र में बांधती हैं। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक हिंदी साहित्य ने मनुष्य के अंतःकरण में करुणा, सह अस्तित्व और मानवीय एकता के द्वीप को प्रज्वलित किया है। हिंदी सिर्फ भाषा नहीं है हिन्दी तो भारत की सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है। यह एक ऐसा सूत्र है जो कि सभी भारतीयों को एक रक्षा सूत्र में बांधे हुए है। प्रस्तुत शोध पत्र भारतीयों के उन नैतिक मूल्यों, व्यक्तिगत विशेषताओं को रेखांकित करता है जो हमें एकता, अखंडता, संप्रभुता और सांस्कृतिक सद्भावना के एक सूत्रीय धागे में पिरोये रखता है।

मुख्य शब्द हिंदी, सांस्कृतिक धरोहर, लोकमंगल, भारतीयता, साहित्य, एकता।

प्रस्तावना

साहित्य में प्रेम और सद्भावना ऐसे सार्वभौमिक विषय हैं जो मानव जीवन को दिशा, संवेदना और नैतिक आधार प्रदान करते हैं। विभिन्न कालों और भाषाओं के साहित्य में इन दोनों भावों का अत्यंत मार्मिक और प्रेरणादायक चित्रण मिलता है। भक्ति काल में कबीर ने साहिब मेरा एक है कहकर संप्रदायों के पार मानवता का संदेश दिया वहीं दूसरी ओर तुलसीदास ने परहित सरिस धर्म नहीं भाई के माध्यम से लोकमंगल और परोपकार को सर्वोच्च मूल्य माना।

1. प्रेम के प्रसंग

साहित्य में प्रेम केवल स्त्री-पुरुष के बीच आकर्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह कई रूपों में प्रकट होता है—

(क) राधा-कृष्ण का आध्यात्मिक प्रेम

राधा और कृष्ण का प्रेम निस्वार्थ, समर्पित और आध्यात्मिक प्रेम का सर्वोच्च उदाहरण है। इसमें विरह और मिलन दोनों की अनुभूति मिलती है, जो प्रेम को गहराई प्रदान करती है।

(ख) लैला-मजनू का त्यागपूर्ण प्रेम

लैला और मजनू की कथा प्रेम के लिए त्याग और संघर्ष का प्रतीक है। यह दर्शाती है कि सच्चा प्रेम सामाजिक बंधनों से परे होता है।

(ग) भक्तिकालीन प्रेम

मीराबाई और सूरदास जैसे संत कवियों ने ईश्वर के प्रति प्रेम को सर्वोच्च स्थान दिया। उनका प्रेम भक्ति, समर्पण और आत्मिक शांति का माध्यम है।

2. सद्भावना के प्रसंग

सद्भावना का अर्थ है—आपसी प्रेम, भाईचारा और सह-अस्तित्व की भावना।

(क) कबीर के दोहे

कबीर ने अपने दोहों में धार्मिक और सामाजिक भेदभाव को समाप्त करने की प्रेरणा दी।

उदाहरण:

“पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय, ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।”

(ख) प्रेमचंद की कहानियाँ

मुंशी प्रेमचंद की रचनाओं में सामाजिक सद्भावना, समानता और मानवीय करुणा का सुंदर चित्रण है। उनकी कहानियाँ जाति, वर्ग और धर्म से ऊपर उठकर मानवता का संदेश देती हैं।

(ग) महात्मा गांधी के विचार

महात्मा गांधी ने सत्य, अहिंसा और प्रेम के माध्यम से समाज में सद्भावना स्थापित करने का प्रयास किया। उनके विचार साहित्य और जीवन दोनों में प्रेरणादायक हैं।

3. साहित्य में प्रेम और सद्भावना का महत्व

- यह मानव जीवन को **संवेदनशील और मानवीय** बनाते हैं।
- समाज में **शांति और एकता** स्थापित करने में सहायक होते हैं।
- **नैतिक मूल्यों** और आदर्शों को सुदृढ़ करते हैं।
- व्यक्ति को **स्वार्थ से ऊपर उठकर परोपकार** की ओर प्रेरित करते हैं।

साहित्य में प्रेम और सद्भावना के प्रसंग हमें यह सिखाते हैं कि जीवन का वास्तविक अर्थ केवल भौतिक सुख नहीं, बल्कि दूसरों के प्रति करुणा, सम्मान और प्रेम में निहित है। ये मूल्य समाज को जोड़ते हैं और एक बेहतर, शांतिपूर्ण दुनिया के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

वास्तव में, आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक हिंदी साहित्य ने मनुष्य के भीतर करुणा, सह-अस्तित्व और मानवीय एकता की भावना को निरंतर पोषित किया है। इसे विभिन्न कालखंडों के उदाहरणों से समझा जा सकता है—

आदिकाल में भले ही वीरगाथाओं का प्रधानत्व रहा, परंतु उनमें भी लोकमंगल और सामूहिकता की भावना निहित थी। समाज और राष्ट्र के लिए समर्पण का भाव एक प्रकार की सामूहिक एकता को ही प्रकट करता है।

भक्तिकाल हिंदी साहित्य में मानवीय करुणा और समानता का स्वर्णयुग कहा जा सकता है।

- **कबीर** ने जाति-पांति और धार्मिक भेदभाव का विरोध करते हुए मानव-एकता का संदेश दिया—“साईं इतना दीजिए...” जैसे पदों में संतुलित जीवन और सह-अस्तित्व की झलक मिलती है।
- **तुलसीदास** ने *रामचरितमानस* के माध्यम से आदर्श मानव और समाज की कल्पना प्रस्तुत की, जिसमें करुणा और धर्म प्रमुख हैं।
- **सूरदास** की रचनाओं में वात्सल्य और प्रेम की अद्भुत अभिव्यक्ति है, जो मानव हृदय को कोमल बनाती है।

रीतिकाल को यद्यपि श्रृंगारिकता के लिए जाना जाता है, फिर भी उसमें मानवीय भावनाओं की सूक्ष्म अभिव्यक्ति दिखाई देती है, जो मनुष्य के अंतर्मन को संवेदनशील बनाती है।

आधुनिक काल में साहित्य ने सामाजिक यथार्थ को सामने लाते हुए करुणा और सह-अस्तित्व को और व्यापक आयाम दिया।

- **मुंशी प्रेमचंद** ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में गरीबों, शोषितों और वंचितों के प्रति गहरी संवेदना जगाई (*गोदान, कफन*)।
- **महादेवी वर्मा** की रचनाओं में करुणा और संवेदनशीलता का अनुठा संसार मिलता है।
- **रामधारी सिंह दिनकर** ने मानवता, न्याय और समानता के पक्ष में अपनी आवाज उठाई।

निष्कर्षतः, हिंदी साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहा, बल्कि यह मानवता के मूल्यों—करुणा, सह-अस्तित्व और एकता—का सशक्त संवाहक रहा है। यह साहित्य समाज को जोड़ने, संवेदनशील बनाने और नैतिक दिशा देने का कार्य निरंतर करता आया है।

भक्ति काल के महान संत कबीर ने “साहिब मेरा एक है” कहकर धार्मिक विभाजनों पर गहरा प्रहार किया और मानवता की एकता का संदेश दिया। उनका यह कथन केवल आध्यात्मिक विचार नहीं था, बल्कि सामाजिक सुधार का भी सशक्त माध्यम था। कबीर के समय में समाज हिंदू और मुस्लिम संप्रदायों में बँटा हुआ था। बाह्य आडंबर, कर्मकांड, जाति-भेद और धार्मिक कट्टरता अपने चरम पर थी। ऐसे में कबीर ने यह स्पष्ट किया कि ईश्वर एक है—वह न केवल मंदिर में है, न केवल मस्जिद में, बल्कि हर जीव में व्याप्त है। इस प्रकार उन्होंने दोनों धर्मों के कृत्रिम भेद को अस्वीकार किया। उनका संदेश था कि मनुष्य को धर्म के नाम पर विभाजित नहीं होना चाहिए, बल्कि प्रेम, करुणा और सत्य के मार्ग पर चलना चाहिए।

गोस्वामी तुलसीदास ने अपनी रचनाओं के माध्यम से मानव जीवन के नैतिक मूल्यों को अत्यंत सरल और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। उनका प्रसिद्ध कथन—

“परहित सरिस धर्म नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहीं अधमाई”

दरअसल लोकमंगल और परोपकार की भावना का सर्वोच्च उद्घोष है।

इस पंक्ति का अर्थ है कि दूसरों के हित (भलाई) से बढ़कर कोई धर्म नहीं है, और दूसरों को कष्ट देने से बड़ा कोई पाप नहीं। यहाँ तुलसीदास यह स्पष्ट करते हैं कि सच्चा धर्म केवल पूजा-पाठ या बाहरी आडंबरों में नहीं, बल्कि दूसरों के कल्याण में निहित है।

तुलसीदास का यह विचार समाज में **लोकमंगल (सार्वजनिक कल्याण)** की भावना को स्थापित करता है। वे मानते हैं कि व्यक्ति का जीवन तभी सार्थक है जब वह दूसरों के सुख-दुख में सहभागी बने और निस्वार्थ भाव से परोपकार करे।

उनकी कृति रामचरितमानस में भी यह भावना बार-बार दिखाई देती है, जहाँ आदर्श पात्र अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज और मानवता के लिए कार्य करते हैं। इस प्रकार, तुलसीदास ने परोपकार को न केवल व्यक्तिगत गुण, बल्कि सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन का सर्वोच्च मूल्य बताया, जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके समय में था।

भक्ति काल के दो महान संत—कबीर और तुलसीदास—ने भारतीय समाज को गहरे मानवीय मूल्यों से समृद्ध किया, यद्यपि उनकी अभिव्यक्ति की शैली भिन्न थी।

कबीर का “साहिब मेरा एक है” कथन उनके निर्गुण भक्ति दृष्टिकोण को प्रकट करता है। वे हिंदू-मुस्लिम, मंदिर-मस्जिद, जाति-पांति जैसी संकीर्णताओं के विरोधी थे। उनके अनुसार ईश्वर एक है और मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है। इस प्रकार कबीर ने संप्रदायों के पार जाकर **सर्वधर्म समभाव, समानता और मानव एकता** का सशक्त संदेश दिया।

दूसरी ओर तुलसीदास का “परहित सरिस धर्म नहीं भाई” कथन लोकमंगल की भावना को सर्वोपरि मानता है। वे सगुण भक्ति परंपरा के कवि होते हुए भी समाज के कल्याण, सेवा, दया और परोपकार को ही सच्चा धर्म बताते हैं। उनके अनुसार दूसरों का भला करना ही मनुष्य का सबसे बड़ा कर्तव्य है।

इस प्रकार, कबीर जहाँ **मानवता और एकता** पर बल देते हैं, वहीं तुलसीदास **परोपकार और लोककल्याण** को सर्वोच्च मूल्य मानते हैं। दोनों संतों की शिक्षाएँ मिलकर यह संदेश देती हैं कि सच्चा धर्म संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानव सेवा और प्रेम में निहित है।

भारत विविधताओं का देश है, जहाँ भाषा, संस्कृति और परंपराएँ अनेक रूपों में विद्यमान हैं। इन विविधताओं के बीच हिंदी एक ऐसी भाषा है, जो भारतीय संस्कृति की आत्मा को अभिव्यक्त करती है। हिंदी ने आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक मानव के अंतःकरण में प्रेम, करुणा और एकता के भावों को जागृत किया है।

हिंदी का ऐतिहासिक विकास

हिंदी का उद्भव संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश के क्रमिक विकास से हुआ है।

- **आदिकाल:** वीरगाथाओं और लोकजीवन का चित्रण
- **भक्तिकाल:** आध्यात्मिकता, भक्ति और मानवता का उत्कर्ष
- **रीतिकाल:** श्रृंगार और काव्य सौंदर्य
- **आधुनिक काल:** सामाजिक चेतना, राष्ट्रीयता और यथार्थवाद

भक्तिकाल में संत कवियों ने हिंदी को जन-जन की भाषा बनाया और इसे सांस्कृतिक एकता का माध्यम बनाया।

हिंदी और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति

हिंदी भारतीय संस्कृति की संवाहक है। इसमें लोकजीवन, परंपराएँ, त्योहार, रीति-रिवाज और नैतिक मूल्य समाहित हैं।

- **लोकगीत, कहावतें और मुहावरे** भारतीय जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करते हैं।
- हिंदी साहित्य में प्रेम, दया, त्याग और परोपकार जैसे मूल्यों का विशेष स्थान है।

आदि भावनाएँ और हिंदी साहित्य

हिंदी साहित्य में आदिकाल से ही मानव की मूल भावनाएँ व्यक्त होती रही हैं—

- **प्रेम:** मानव संबंधों की आधारशिला
- **करुणा:** सामाजिक संवेदना का प्रतीक
- **भक्ति:** ईश्वर और मानव के बीच संबंध
- **लोकमंगल:** समाज कल्याण की भावना

भक्तिकालीन संतों ने इन भावनाओं को सरल भाषा में व्यक्त कर समाज को जोड़ने का कार्य किया।

हिंदी और राष्ट्रीय एकता

हिंदी भारत की एकता और अखंडता का महत्वपूर्ण आधार है। यह विभिन्न भाषाई और सांस्कृतिक समुदायों के बीच सेतु का कार्य करती है। स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी ने जनजागरण और राष्ट्रीय चेतना को मजबूत किया। हिंदी भारत में व्यापक रूप से बोली और समझी जाने वाली भाषा है, इसलिए यह राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह विभिन्न भाषाई, सांस्कृतिक और क्षेत्रीय विविधताओं के बीच एक **संपर्क भाषा (link language)** के रूप में कार्य करती है।

भारत जैसे बहुभाषी देश में, जहाँ सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलित हैं, हिंदी एक ऐसे माध्यम के रूप में उभरती है जो अलग-अलग प्रदेशों के लोगों को आपस में जोड़ती है। जब विभिन्न क्षेत्रों के लोग आपसी संवाद के लिए एक सामान्य भाषा का उपयोग करते हैं, तो आपसी समझ, सहयोग और राष्ट्रीय भावना का विकास होता है।

हिंदी का साहित्य भी राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देता है। हिंदी साहित्य में प्रेम, सद्भावना, भाईचारा और देशभक्ति जैसे मूल्यों का समावेश है, जो लोगों को एक सूत्र में बाँधने का कार्य करते हैं। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भी हिंदी ने जन-जन को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

हालाँकि, यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि राष्ट्रीय एकता का अर्थ किसी एक भाषा को थोपना नहीं है। भारत की सभी भाषाएँ समान रूप से महत्वपूर्ण हैं और उनका सम्मान करना भी उतना ही जरूरी है। हिंदी का महत्व तभी सार्थक है जब वह अन्य भाषाओं के साथ सामंजस्य बनाते हुए एकता को प्रोत्साहित करे।

निष्कर्षतः, हिंदी राष्ट्रीय एकता की सशक्त आधारशिला है, जो विविधता में एकता की भावना को सुदृढ़ करती है, बशर्ते इसे समावेशी दृष्टिकोण के साथ अपनाया जाए।

भाषा लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति की वाहक होती है।

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा लोकजीवन की परंपराएँ, मान्यताएँ और अनुभव पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचित और संप्रेषित होते हैं। लोक साहित्य—जैसे लोकगीत, लोककथाएँ, कहावतें, मुहावरे, पहेलियाँ आदि—मुख्यतः मौखिक परंपरा के रूप में जीवित रहता है, और उसका आधार भाषा ही होती है। बिना भाषा के न तो इनका संरक्षण संभव है और न ही उनका प्रसार।

लोक संस्कृति में किसी समाज का रहन-सहन, वेशभूषा, रीति-रिवाज, उत्सव, आचार-विचार और जीवन दृष्टि शामिल होती है। ये सभी तत्व भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त होते हैं। उदाहरण के लिए, किसी क्षेत्र के लोकगीत उस क्षेत्र की भावनाओं, प्रकृति, श्रम, प्रेम और सामाजिक संबंधों को जीवंत रूप में प्रस्तुत करते हैं, और यह सब भाषा के द्वारा ही संभव होता है। भाषा न केवल लोक साहित्य को संरक्षित करती है, बल्कि उसमें निहित सांस्कृतिक मूल्यों को भी सुरक्षित रखती है। कहावतों और मुहावरों में लोकज्ञान, जीवनानुभव और नैतिक शिक्षा समाहित होती है, जो भाषा के माध्यम से समाज में प्रवाहित होती रहती है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि भाषा एक सेतु की तरह कार्य करती है, जो लोक साहित्य और लोक संस्कृति को जोड़ती है तथा उन्हें जीवंत बनाए रखती है।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की प्रासंगिकता

वर्तमान वैश्वीकरण के युग में भी हिंदी का महत्व बढ़ रहा है—

- शिक्षा, मीडिया और तकनीकी क्षेत्र में हिंदी का विस्तार
- डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी सामग्री की वृद्धि
- वैश्विक स्तर पर हिंदी का प्रसार

चुनौतियाँ और संभावनाएँ

चुनौतियाँ: अंग्रेजी का बढ़ता प्रभाव, क्षेत्रीय भाषाओं के साथ संतुलन, तकनीकी शब्दावली की कमी

संभावनाएँ: नई शिक्षा नीति में हिंदी का प्रोत्साहन, डिजिटल माध्यमों में हिंदी का विस्तार, सांस्कृतिक पुनर्जागरण में भूमिका

हालांकि भाषा किसी देश के नागरिकों की सांस्कृतिक पहचान का एक अत्यंत महत्वपूर्ण आधार होती है—लेकिन यह अकेला आधार नहीं है। भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति की वाहक होती है। किसी भी समाज के रीति-रिवाज, परंपराएँ, लोककथाएँ, साहित्य, धार्मिक विश्वास और ऐतिहासिक अनुभव भाषा के माध्यम से ही पीढ़ी दर पीढ़ी संचारित होते हैं। उदाहरण के लिए हिंदी, तमिल, बंगाली या मराठी जैसी भाषाएँ केवल बोलचाल का साधन नहीं हैं, बल्कि वे अपने-अपने क्षेत्र की विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत को अभिव्यक्त करती हैं।

भाषा व्यक्ति और समाज के बीच एक भावनात्मक संबंध भी स्थापित करती है। जब लोग अपनी मातृभाषा में संवाद करते हैं, तो उसमें आत्मीयता, अपनापन और पहचान की अनुभूति अधिक गहरी होती है। इसी कारण भाषा अक्सर किसी राष्ट्र या समुदाय की पहचान का प्रतीक बन जाती है। हालाँकि, यह मानना पूरी तरह सही नहीं होगा कि केवल भाषा ही सांस्कृतिक पहचान तय करती है। एक देश की पहचान उसके इतिहास, धर्म, जीवन-शैली, कला, भोजन, पहनावा और सामाजिक मूल्यों से भी निर्मित होती है। भारत जैसे बहुभाषी देश में यह स्पष्ट दिखता है कि अनेक भाषाओं के बावजूद एक साझा सांस्कृतिक पहचान मौजूद है।

इसलिए निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भाषा सांस्कृतिक पहचान का एक मजबूत स्तंभ है, लेकिन यह अन्य सांस्कृतिक तत्वों के साथ मिलकर ही किसी राष्ट्र या समाज की पूर्ण पहचान बनाती है।

हिंदी न केवल एक भाषा है, बल्कि भारत की सांस्कृतिक धरोहर का जीवंत प्रतीक है। इसमें भारतीय समाज के आदि भाव—प्रेम, करुणा, सहिष्णुता और लोकमंगल—समाहित हैं। हिंदी ने सदैव समाज को जोड़ने, संस्कृति को संरक्षित करने और मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करने का कार्य किया है। अतः हिंदी का संरक्षण और संवर्धन हमारी सांस्कृतिक जिम्मेदारी है।

साहित्य में प्रेम और सद्भावना की परंपरा हिन्दी साहित्य के **आदिकाल से आधुनिक काल** तक निरंतर प्रवाहित होती रही है। विभिन्न कालों में कवियों ने प्रेम को केवल व्यक्तिगत भावना नहीं, बल्कि **मानवता, करुणा, समरसता और लोकमंगल** के रूप में प्रस्तुत किया है। हिंदी साहित्य के मध्यकालीन कवियों ने समाज में व्याप्त अंधविश्वास, पाखंड, जाति-भेद और कुरीतियों पर तीखा प्रहार किया है। इन कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक सुधार की अलख जगाई। यहाँ कबीरदास, तुलसीदास और गुरु नानक देव जी की रचनाओं का विवरण दिया गया है। नीचे प्रमुख कालों के अनुसार श्लोक/चौपाई/पद के उदाहरण दिए जा रहे हैं—

1. आदिकाल (वीरगाथा काल)

इस काल में वीरता प्रधान रही, फिर भी **देशप्रेम, निष्ठा और त्याग** के रूप में प्रेम दिखाई देता है।

उदाहरण:

“जिनके हृदय बसत है प्रीति।

तिनके हिये नहिँ उपजे भीति॥”

यहाँ प्रेम को **निर्भयता और साहस** का आधार बताया गया है।

2. भक्ति काल

यह काल प्रेम और सद्भावना का स्वर्ण युग है। इसमें **ईश्वर-प्रेम, मानव-प्रेम और समता** का भाव प्रमुख है।

(क) कबीरदास

“साहिब मेरा एक है, दूजा कहुँ न कोय।

एक ही सेवों प्रेम से, दूजा भाव न होय॥”

संदेश: **सर्वधर्म समभाव और एकता**

(ख) तुलसीदास

“परहित सरिस धर्म नहि भाई।
पर पीड़ा सम नहि अधमाई॥”
संदेश: **परोपकार और करुणा ही सर्वोच्च धर्म है**

(ग) सूरदास

“मैया! मोहि दाऊ बहुत खिझायो।” यहाँ बाल-कृष्ण लीला के माध्यम से **मातृ प्रेम और वात्सल्य** का सुंदर चित्रण है।

(घ) रहीम

“रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ी चटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाय॥”
संदेश: **प्रेम संबंधों की कोमलता और महत्व**

3. रीतिकाल

इस काल में प्रेम का स्वरूप अधिकतर **श्रृंगारिक (नायिका-नायक प्रेम)** हो गया।

(बिहारी)

“नैनन ही सों बात है, नैनन ही सों प्रीति।
नैनन ही सों सब कहे, नैनन ही सों मीत॥” यहाँ प्रेम को **नेत्रों की भाषा** के रूप में व्यक्त किया गया है।

4. आधुनिक काल

इस काल में प्रेम का स्वरूप व्यापक होकर **मानवता, राष्ट्रप्रेम और सामाजिक सद्भावना** में बदल गया।

(मैथिलीशरण गुप्त)

“यही पशु प्रवृत्ति है कि आप-आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।” संदेश: **मानवता और परोपकार ही सच्चा प्रेम है**

(जयशंकर प्रसाद)

“अरुण यह मधुमय देश हमारा।” यहाँ राष्ट्रप्रेम और सांस्कृतिक सद्भावना का भाव है।

(महादेवी वर्मा)

“मैं नीर भरी दुख की बदली।” यहाँ प्रेम **संवेदनशीलता और करुणा** के रूप में प्रकट होता है।

निष्कर्ष

हिन्दी साहित्य की यात्रा में प्रेम और सद्भावना—

- आदिकाल में **वीरता और निष्ठा** के रूप में
- भक्ति काल में **ईश्वर और मानव प्रेम** के रूप में
- रीतिकाल में **श्रृंगारिक सौंदर्य** के रूप में
- आधुनिक काल में **मानवता और राष्ट्रप्रेम** के रूप में विकसित हुई

इस प्रकार प्रेम हिन्दी साहित्य की **आत्मा** है, जो समाज को जोड़ने और मानवता को सशक्त बनाने का कार्य करती है। यह प्रश्न बहुत सुंदर और मूल्यवान है, क्योंकि कबीरदास, तुलसीदास, गुरु नानकदेव आदि संत कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज की कुरीतियों, पाखंड, भेदभाव आदि पर गहरा प्रहार किया। नीचे इनके कुछ प्रमुख श्लोकों, दोहों और चौपाइयों का रस, अलंकार और भावार्थ सहित विवरण दिया गया है।

कबीरदास

दोहा:

पाथर पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहाड़। ताते तो चाकी भली, पीस खाय संसार॥

रस: व्यंग्य रस (साथ ही भक्तिरस की अंतर्धारा)

अलंकार: विरोधाभास अलंकार, अनुप्रास अलंकार

भावार्थ:

कबीरदास जी मूर्तिपूजा जैसे बाह्य दिखावे पर प्रहार करते हैं। वे कहते हैं कि यदि ईश्वर पत्थर में होता तो पहाड़ ही सर्वोच्च देवता होता। अतः ऐसी अधभक्ति से अच्छा है कि इंसान सत्कर्म करे — जैसे चाकी जो पीसकर दूसरों के काम आती है।

कबीरदास का दूसरा दोहा

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥
रस: ज्ञानरस (शांत एवं व्यंग्य रस का मिश्रण)
अलंकार: रूपक अलंकार, अनुप्रास
भावार्थ:

कबीरदास समाज में जाति-पाँति के भेद पर प्रहार करते हुए कहते हैं कि किसी मनुष्य का मूल्य उसकी जाति से नहीं, उसके ज्ञान और कर्म से मापो। जैसे तलवार की कीमत उसकी धार से होती है, म्यान से नहीं।

तुलसीदास

चौपाई (रामचरितमानस, बालकाण्ड):
जड़ मूल अघ अवगुन अंधेरा। ताति लोभ ममता करि घेरा॥
भइ परदोष न भखइ जोइ। सूरज जैसेँ दुख द्यावन सोइ॥
रस: भक्तिरस
अलंकार: उपमा अलंकार (सूर्य के साथ तुलना), विरोधाभास
भावार्थ:

तुलसीदास जी यहाँ बताते हैं कि हमारे भीतर के लोभ, मोह, अवगुण अंधकार के समान हैं। जो व्यक्ति दूसरों के दोष नहीं देखता और सबको प्रकाश देता है, वह सूर्य की तरह समाज को सुख पहुँचाने वाला होता है। यह सामाजिक सदाचार का संदेश है।

गुरु नानकदेव जी

श्लोक (जपजी साहब से):
अवल अलह नूर उपाया, कुदरत के सब बंदे।
एक नूर ते सब जग उपज्या, कौन भले को मंदे॥
रस: अद्भुत और शान्त रस
अलंकार: अनुप्रास, पुनरुक्ति, विरोधाभास
भावार्थ:

गुरु नानकदेव जी समाज में समानता का संदेश देते हैं। वे कहते हैं कि सभी प्राणियों की रचना एक ही ईश्वर के प्रकाश से हुई है, इसलिए कोई ऊँचा या नीचा नहीं है। यह जातिवाद और भेदभाव पर करारा प्रहार है।

तुलसीदास (एक और चौपाई):

पर उपदेश कुशल बहुतेरे।जे आचरहि सो नर न घनेरे॥
रस: नीति और व्यंग्य रस
अलंकार: अनुप्रास, विरोधाभास
भावार्थ:

तुलसीदास समाज में उपदेश देने वालों की कपट प्रवृत्ति पर व्यंग्य करते हैं — कहते हैं कि उपदेश देना आसान है, पर स्वयं आचरण करना कठिन। इससे वे समाज में आचरण की महत्ता पर बल देते हैं।
ये सभी संत-कवि समाज में मौजूद अंधविश्वास, भेदभाव, पाखंड, और अन्याय के विरुद्ध अपने काव्य को हथियार बनाकर सत्य, समानता, और प्रेम का संदेश देते हैं।
हिंदी साहित्य के मध्यकालीन कवियों ने समाज में व्याप्त अंधविश्वास, पाखंड, जाति-भेद और कुरीतियों पर तीखा प्रहार किया है। इन कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक सुधार की अलख जगाई। यहाँ कबीरदास, तुलसीदास और गुरु नानक देव जी की रचनाओं का विवरण दिया गया है।

कबीरदास : धार्मिक पाखंड और जाति-भेद पर प्रहार

कबीरदास ने सीधे शब्दों में निर्भक्ता से रूढ़ियों पर चोट की। उनकी भाषा सधुक्कड़ी है।

दोहा (जाति-भेद पर):

जाति-पाँति पूछे नहीं कोई, हरि को भजै सो हरि का होई।

भावार्थ: ईश्वर के दरबार में जाति-पाति नहीं पूछी जाती। जो ईश्वर को भजता है, वह ईश्वर का ही हो जाता है। यह मानवतावादी दृष्टिकोण है।

दोहा (आडंबर पर):

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर॥

भावार्थ: माला घुमाते हुए बहुत समय बीत गया, लेकिन मन की चंचलता और कुरीतियां नहीं मिटीं। हाथ की माला छोड़कर मन के अंदर की माला (सच्चाई) को बदलो।

तुलसीदास (Tulsidas): सामाजिक नैतिकता और आडंबर पर प्रहार

तुलसीदास ने रामचरितमानस में समाज को दिशा दिखाते हुए आडंबर और स्वार्थ पर चोट की है।

चौपाई/दोहा (स्वार्थ और पाखंड पर - रामचरितमानस से):

तिनका कबहूँ न निंदिये, जो पाँव तले होय। कबहूँ उड़ि आँखिन पड़े, पीर घनेरी होय॥ (कबीर के दोहे से प्रेरित, लेकिन सामाजिक सन्देश)

तुलसीदास का कथन - अवगुन सिंधु मंदमति कामी। बेद बिदूषक परधन स्वामी॥

भावार्थ: तुलसीदास ऐसे लोगों पर प्रहार करते हैं जो अवगुणों के सागर हैं, मंदबुद्धि हैं, कामी हैं और वेदों की निंदा करते हैं। वे कपटी लोग ऊपरी दिखावा करते हैं।

रस: शांत रस/वीभत्स रस (पाखंडियों के प्रति घृणा)।

1. कबीरदास

(क)

“पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥”

- **रस:** शांत रस
- **अलंकार:** विरोधाभास, अनुप्रास
- **भावार्थ:** कबीरदास कहते हैं कि केवल किताबें पढ़ने से कोई सच्चा ज्ञानी नहीं बनता। जो प्रेम को समझता है वही सच्चा विद्वान है।
- **कुरीति पर प्रहार:** आडंबरपूर्ण पांडित्य और दिखावटी ज्ञान

2. तुलसीदास

(क)

“परहित सरिस धर्म नहि भाई,
परपीड़ा सम नहि अधमाई॥”

- **रस:** शांति रस
- **अलंकार:** अनुप्रास, यमक
- **भावार्थ:** दूसरों का भला करना सबसे बड़ा धर्म है और दूसरों को कष्ट देना सबसे बड़ा पाप है।
- **कुरीति पर प्रहार:** स्वार्थ, हिंसा, और समाज में बढ़ती निष्ठुरता

(ख)

“जाकी रही भावना जैसी,
प्रभु मूरत देखी तिन तैसी॥”

- **रस:** भक्ति रस
- **अलंकार:** अनुप्रास
- **भावार्थ:** मनुष्य जैसा सोचता है, उसे भगवान भी वैसा ही दिखाई देते हैं।
- **कुरीति पर प्रहार:** संकीर्ण सोच और पूर्वाग्रह

3. गुरु नानक देव

(क)

“पवन गुरु, पानी पिता, माता धरत महत।”

- **रस:** शांति रस
- **अलंकार:** रूपक

- **भावार्थ:** हवा गुरु है, पानी पिता है और धरती माता है—प्रकृति का सम्मान करना चाहिए।
- **कुरीति पर प्रहार:** प्रकृति के प्रति उपेक्षा और पर्यावरण का शोषण

(ख)

“ना को हिन्दू, ना मुसलमान।”

- **रस:** शांति रस
- **अलंकार:** विरोधाभास
- **भावार्थ:** सभी मनुष्य समान हैं, धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए।
- **कुरीति पर प्रहार:** धार्मिक कट्टरता और भेदभाव

4. महादेवी वर्मा (संक्षेप में)

महादेवी वर्मा ने सीधे चौपाइयों के माध्यम से कुरीतियों पर प्रहार नहीं किया, बल्कि उनकी कविताओं में **नारी-वेदना, संवेदनशीलता और आंतरिक संघर्ष** दिखता है। महादेवी वर्मा की रचनाएँ *छायावाद* से संबंधित हैं और उन्होंने सीधे “श्लोक-चौपाई” शैली में सामाजिक कुरीतियों पर उतना प्रहार नहीं किया, जितना भक्ति-कालीन कवियों ने किया।

उदाहरण:

“मैं नीर भरी दुख की बदली।”

- **रस:** करुण रस
- **अलंकार:** रूपक
- **भावार्थ:** कवयित्री स्वयं को दुखों से भरी बादल के रूप में प्रस्तुत करती हैं—यह समाज में नारी की पीड़ा का प्रतीक है।
- **सामाजिक संकेत:** नारी की उपेक्षा और संवेदनहीन समाज

निष्कर्ष

भक्ति-कालीन कवियों—कबीर, तुलसी और गुरु नानक—ने **धार्मिक आडंबर, जातिवाद, पाखंड और सामाजिक अन्याय** पर तीखा प्रहार किया। वहीं महादेवी वर्मा ने आधुनिक युग में **मानवीय संवेदना और नारी-वेदना** को स्वर देकर समाज को आईना दिखाया।

1. कबीरदास

(क) दोहा

“पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।

ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय ॥”

- **रस:** शांत रस
- **अलंकार:** विरोधाभास अलंकार
- **भावार्थ:** कबीरदास कहते हैं कि केवल पुस्तकों का ज्ञान पर्याप्त नहीं है। सच्चा ज्ञान प्रेम और मानवता में है। यह दोहा दिखावे के ज्ञान और पाखंड पर प्रहार करता है।

(ख) दोहा

2. तुलसीदास

(क) चौपाई

“परहित सरिस धरम नहि भाई।

पर पीड़ा सम नहि अधमाई ॥”

- **रस:** शांत रस
- **अलंकार:** अनुप्रास अलंकार (“परहित”, “पर पीड़ा”)
- **भावार्थ:** दूसरों की भलाई सबसे बड़ा धर्म है और दूसरों को दुख देना सबसे बड़ा पाप। यह स्वार्थ और क्रूरता जैसी कुरीतियों के विरुद्ध संदेश देता है।

(ख) चौपाई

“जाकी रही भावना जैसी।

प्रभु मूरत देखी तिन तैसी ॥”

- **रस:** भक्ति रस
- **अलंकार:** उदाहरण अलंकार
- **भावार्थ:** व्यक्ति की सोच और भावना के अनुसार ही वह ईश्वर को देखता है। यह संकीर्ण मानसिकता और भेदभाव पर प्रहार करता है।

3. गुरु नानक देव

(क) श्लोक

“ना को हिन्दू, ना मुसलमान।”

- रस: शांत रस
- अलंकार: विरोधाभास अलंकार
- भावार्थ: सभी मनुष्य एक हैं, धर्म के नाम पर भेदभाव व्यर्थ है। यह सांप्रदायिकता और जातिवाद पर प्रहार करता है।

(ख) वाणी

“पवन गुरु, पानी पिता, माता धरत महत।”

- रस: शांत रस
- अलंकार: रूपक अलंकार
- भावार्थ: प्रकृति को गुरु, पिता और माता के रूप में बताया गया है। यह पर्यावरण और जीवन के प्रति सम्मान सिखाता है तथा मानव अहंकार पर प्रहार करता है।

4. सुभद्रा कुमारी चौहान (संदर्भ)

सुभद्रा कुमारी चौहान मुख्यतः राष्ट्रवादी कवयित्री थीं, लेकिन उनकी रचनाओं में भी सामाजिक चेतना है—

पंक्ति

“खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झाँसी वाली रानी थी।”

- रस: वीर रस
- अलंकार: अनुप्रास अलंकार
- भावार्थ: यह पंक्ति नारी सशक्तिकरण और साहस को दर्शाती है, जो समाज की कुरीतियों (नारी हीनता) पर प्रहार करती है।

निष्कर्ष

इन सभी कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से पाखंड, जातिवाद, धार्मिक आडंबर, स्वार्थ और अन्याय जैसी कुरीतियों पर प्रहार किया और प्रेम, समानता तथा मानवता का संदेश दिया। हिंदी के उन श्लोक चौपाइयों रस एवं अलंकारों का विवरण दीजिए और उनका भावार्थ भी लिखिए जिनके द्वारा कबीरदास तुलसीदास गुरुनानक देव आदि कवियों ने समाज के कुरीतियों पर प्रहार किया हिंदी साहित्य के भक्ति काल में कबीरदास, तुलसीदास और गुरु नानक देव जैसे संतकवियों ने अपने श्लोकों, दोहों और चौपाइयों के माध्यम से समाज की कुरीतियों—जैसे पाखंड, जातिवाद, अंधविश्वास, बाह्य आडंबर, धार्मिक कट्टरता तथा सामाजिक भेदभाव—पर तीखा प्रहार किया। इन कवियों ने मानवता, समानता, प्रेम, भाईचारे और सत्य के आदर्शों को स्थापित करते हुए समाज को नैतिक एवं आध्यात्मिक जागरण का संदेश दिया। उनकी वाणी ने लोगों को आडंबरपूर्ण कर्मकांडों से दूर रहकर सच्ची भक्ति, सदाचार और मानव सेवा का मार्ग अपनाने की प्रेरणा प्रदान की, जिसके कारण भक्ति साहित्य भारतीय समाज में सामाजिक सुधार और जनजागरण का सशक्त माध्यम बन गया। इस प्रकार इन कवियों ने समाज सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा लोगों को मानवता, समानता, प्रेम, सदाचार और सच्ची भक्ति का मार्ग अपनाने की प्रेरणा दी। इनके साहित्य ने समाज में जागरूकता उत्पन्न कर सामाजिक एकता, नैतिक मूल्यों और धार्मिक सहिष्णुता को सुदृढ़ बनाने में विशेष योगदान दिया।

संदर्भ सूची

1. मंगल, जुगेंद्र और यादव, सोनिया। (2024)। "भक्ति साहित्य में भाषाई कौशल का विकास"। शोधकोश: जर्नल ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स, वॉल्यूम। 5(1). डीओआई: <https://doi.org/10.29121/shodhkos.v5.i1.2024.5575>।
2. भक्ति साहित्य में लोकभाषा, भक्ति, प्रेम और सांस्कृतिक समन्वय की भूमिका का अध्ययन।
3. कुमार, कमलेश और मिश्रा, श्रीकांत। (2024)। "भक्तिकालीन साहित्य में सगुण भक्ति की व्यापकता का अनुशीलन"। शोधकोश: जर्नल ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स, वॉल्यूम। 5(5). डीओआई: <https://doi.org/10.29121/shodhkos.v5.i5.2024.2525>।
4. भक्तिकाल में प्रेम, भक्ति एवं लोकमंगल की भावना का विश्लेषण।
5. अनेजा, ऋचा और सिंह, संग्राम। (2024)। "संगीत का हिंदू और सिख धर्म के साथ आध्यात्मिक संबंध"। शोधकोश: जर्नल ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स।
6. धार्मिक साहित्य, प्रेम, आध्यात्मिक एकता और सामाजिक सादृश्य के आयामों पर आधारित अध्ययन।
7. यादव, ज्योति. (2011). "गीतांजलि में टैगोर का भक्ति प्रेम"।
8. रवीन्द्रनाथ ठाकुर की काव्य में आध्यात्मिक प्रेम, मानवतावाद और विश्वबन्धुत्व की अवधारणा का अध्ययन।

9. शर्मा, राहुल. (2022)। "आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श और जनसत्ता (2009-2014)"। रिसर्च रिव्यू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी, 7(5), 123-127।
10. आधुनिक हिन्दी साहित्य में मानवीयता, अनुभूतियों और सामाजिक वैयक्तिकता का अध्ययन।
11. राजोटे, फ्रेडा। (1966) "श्रीकृष्ण द्वारा उदाहरण के रूप में प्रेम की धार्मिक और अपवित्र अवधारणाओं का एक तुलनात्मक अध्ययन"। मैकगिल विश्वविद्यालय थीसिस।
 - i. कृष्ण साहित्य में लौकिक एवं अलौकिक प्रेम की अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन।